eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

औरैया जनपद के विकास एवं वर्तमान स्वरूप में कृषि का योगदान

[1]रवि गुप्ता
[2]एम.पी. गुप्ता
[1]वाणिज्य संकाय, विक्रमाजीत सिंह सनातन धर्म कॉलेज, कानपुर ,उत्तर प्रदेश
[2]वाणिज्य संकाय, विक्रमाजीत सिंह सनातन धर्म कॉलेज, कानपुर ,उत्तर प्रदेश

Received: 07 July 2021, Accepted: 15 July 2021, Published with Peer Review on line: 10 Sep 2021

Abstract

औरैया मध्य उत्तर प्रदेश के गंगा–यमुना दोआब क्षेत्र के मध्य स्थित ग्रामीण परिवेश वाला एक महत्वपूर्ण जिला जो कि वर्ष 1997 में अस्तित्व में आया। यहाँ की 80% से अधिक जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। कृषि ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं रोज़गार में प्रमुख योगदान है। प्रस्तुत शोधपत्र जनपद औरैया में विकास एवं वर्तमान स्वरूप में कृषि के योगदान पर आधारित है। औरैया जनपद में खरीफ, रबी व जायद, तीनों ही प्रकार की फसलें उगाई जाती हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ दालें, आलू, गन्ना, तम्बाकू, फल एवं सब्ज़ियां उगाई जाती हैं। मुख्यतः कृषि औरैया जनपद के विकास की रीढ़ है तथा इसका जनपद के रोज़गार में प्रमुख योगदान है। शोध में औरैया जनपद में कृषि के भविष्य एवं सुधार हेतु नीतियां एवं सुझाव भी प्रदान किये गये हैं।

तकनीकी शब्द – औरैया, दोआब, कृषि गतिविधियां, ग्रामीण अर्थव्यवस्था आदि।

प्रस्तावना

मानव सभ्यता के विकास के आरम्भिक काल से ही भारत सहित सम्पूर्ण विश्व में कृषि का विशेष महत्व रहा है। कृषि प्राचीन काल से ही कृषि मानव सभ्यता के पोषण एवं अर्थव्यवस्था का प्रमुख आधार रही है। प्राचीन भारत में कृषि एक सफल एवं सम्पूर्ण आर्थिक क्रिया थी। वेदों में भूमि का वर्गीकरण, विभिन्न प्रकार की कृषि विधियों, कृषि यंत्रों, जैविक खाद बनाने जैसी विधियों का सम्यक विवरण मिलता है।

ईसा से 3000 वर्ष पूर्व भारत के उत्तर पश्चिमी भाग में चावल, गेहूं एवं जौ की कृषि का उल्लेख मिलता है। सिन्धु घाटी सभ्यता के निवासियों ने चावल, गेहूं एवं जौ की कृषि को विधिवत रूप से उगाने हेतु व्यवस्था निर्मित की थी। सिन्धु घाटी सभ्यता के काल से लेकर 18वीं शताब्दी तक भारत में पर्यावरण सौम्य जैविक उर्वरकों पर आधारित की जाती थी। विगत 5–6 दशकों में पाश्चात्य प्रभाव, निरंतर जनसंख्या वृद्धि, औद्योगीकरण, नगरीकरण, वैज्ञानिक विकास एवं आधुनिकता के नाम पर जो मानवीय क्रियाकलाप किये गये, उन्होंने भारतीय कृषि एवं उसके स्वरूप को अत्यधिक प्रभावित किया है। हरित क्रांति के नाम पर रसायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों के प्रयोग को बढ़ावा मिला, जिससे उत्पादन तो बढ़ा, पर अनेक सामाजिक एवं पर्यावरणीय समस्याएं भी उत्पन्न हुईं।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

स्वतंत्रता के सात दशक बाद भी कृषि का भारत के ग्रामीण रोज़गार तथा विकास में महत्वपूर्ण योगदान है। स्वतंत्रता के समय भारत की 70% जनसंख्या प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से कृषि कार्यों से जुड़ी थी। तब से सात दशकों बाद निरंतर वैज्ञानिक प्रगति, औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के बाद भी भारत आज तक एक कृषि प्रधान देश ही है। वर्तमान में भी 55% से अधिक जनसंख्या प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से कृषि सम्बन्धी कार्यों से ही जुड़ी है। सन 1947 से अब तक की सभी सरकारों ने यह माना है कि कृषि के विकास के बिना देश में समृद्धि लाना बिलकुल सम्भव नहीं है। स्वतंत्रता के समय भी कृषि देश के विकास एवं समृद्धि की रीढ़ थी और आज भी है। वर्तमान में भारत दालों और दूध एवं दुग्ध उत्पादों के उत्पादन में विश्व में प्रथम और चावल उत्पादन में द्वितीय है। इसी प्रकार गेहूँ, गन्ना, ज्वार, बाजरा, मक्का आदि के उत्पादन में भी भारत विश्व का अग्रणी देश है।

भारत के अनेक दूरदराज़ एवं ग्रामीण क्षेत्र भारत के कृषि विकास में अपना योगदान कर रहे हैं। प्रस्तुत शोधपत्र औरैया जनपद के विकास में योगदान पर आधारित है।

अध्ययन क्षेत्र

औरैया जनपद 17 सितम्बर 1997 को अस्तित्व में आया। जब इटावा जनपद की औरैया एवं बिधूना तहसीलों को अलग करके नवीन जनपद का सृजन किया गया। औरैया की विविधताओं की भूमि कहा जाता है। यह कानपुर मण्डल का एक प्रमुख जनपद है, जिसका क्षेत्रफल 2016 वर्ग किमी है। इसके पूर्व में कानपुर देहात, पश्चिम में इटावा, उत्तर में कन्नौज एवं दक्षिण में जालौन जनपद स्थित है। सम्पूर्ण जनपद सात विकासखण्डों में विभाजित है जिसमें 474 ग्राम पंचायतें एवं 839 ग्राम हैं। इसमें नगर पालिका परिषद तथा 6 नगर पंचायतें भी हैं। 2011 के आंकड़ों के अनुसार यहाँ की लगभग 83% जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में और 17% जनसंख्या नगरीय क्षेत्रों में निवास करती है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि जनपद औरैया एक ग्रामीण अर्थव्यवस्था का उत्तम उदाहरण है। यह एक कृषि प्रधान जिला है, जहाँ रबी, खरीफ, जायद तीनों प्रकार की फसलें उगाई जाती हैं। इसके अतिरिक्त फल एवं सब्ज़ी का उत्पादन भी होता है।

कृषि फसलें

औरैया जनपद गंगा–यमुना के मध्य के बीच स्थित दोआब का महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यमुना व गंगा की सहायक नदियों–पाण्डु, सेंगुर, रिंद, पुरहा एवं अहन्या आदि औरैया से होकर गुज़रती हैं, अतः यहाँ की भूमि इन नदियों के द्वारा बहाकर लाई गई उपजाऊ मिट्टी से बनी है जिससे यह क्षेत्र कृषि फसलों के लिए अत्यंत उपयोगी है। अतः औरैया जनपद में खरीफ, रबी एवं जायद तीनों प्रकार की फसलों के उत्पादन में अग्रणी स्थान रखता है।

खरीफ की फसलें

खरीफ की फसलें वर्षा ऋतु में उगाई जाती हैं। इनकी बुआई का समय जुलाई से अक्टूबर तक होता है। खरीफ फसलों को अन्य फसलों की अपेक्षा कम सिंचाई की आवश्यकता होती है। कुल कृषि योग्य भूमि के लगभग 45% भाग पर खरीफ की कृषि की जाती है। जनपद के ऐरवा कटरा, औरैया, बिधूना, अछल्दा, सहार, अजीतमल, भाग्यनगर में खरीफ की फसलें उगाई जाती हैं। जनपद औरैया में उगाई जाने वाली प्रमुख फसलें धान (चावल), बाजरा, मूंग, ज्वार, मक्का, उड़द, अरहर, मूंगफली, तिल एवं अरहर हैं।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

चावल

जनपद औरैया में लगभग 50000 हेक्टेअर क्षेत्र में चावल की कृषि की जाती है। इनमें से 95% कुल बोया गया भाग सिंचित क्षेत्र तथा लगभग 5% असिंचित क्षेत्र के रूप में था। चावल की सर्वाधिक कृषि बिधूना विकासखण्ड में की जाती है। दूसरे व तीसरे पायदान पर क्रमशः कुमघट, सहार एवं अछल्दा विकास खण्ड आते हैं। इसी क्रम में ऐरवा कटरा चौथे स्थान पर, भाग्यनगर पाँचवें, औरैया छठे तथा अजीतमल सातवें स्थान पर आता है। यहाँ उगाई जाने वाली चावल की प्रमुख किस्मों में अटल इंद्रासन, साकेत, हाइब्रिड आदि प्रमुख हैं।

मक्का

औरैया जनपद में लगभग 10000 हेक्टेअर भूमि पर मक्का की खेती की जाती है। मक्का की सर्वाधिक कृषि ऐरवा कटरा विकासखण्ड में की जाती है। सहार एवं बिधूना विकासखण्ड क्रमशः दूसरे व तीसरे स्थान पर हैं जबकि अछल्दा चौथे, अजीतमल पाँचवें, भाग्य नगर छठे तथा औरैया विकासखण्ड सातवें स्थान पर है। औरैया जनपद में मक्का की कृषि के कुल क्षेत्र का लगभग 80% सिंचित क्षेत्र तथा 20% असिंचित क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। मक्का का सर्वाधिक सिंचित क्षेत्र बिधूना विकासखण्ड में तथा न्यूनतम सिंचित क्षेत्र औरैया विकासखण्ड में है।

ज्वार

जनपद औरैया में लगभग 2000 हेक्टेअर क्षेत्र में ज्वार की खेती की जाती है। औरैया के भाग्य नगर विकासखण्ड में ज्वार की सर्वाधिक खेती की जाती है, जबकि औरैया विकासखण्ड दूसरे, अजीतमल तीसरे, सहार चौथे, अछल्दा पाँचवें, ऐरवा कटरा छठे व बिधूना ज्वार की कृषि की दृष्टि से सातवें स्थान पर है। ज्वार की कृषि के अन्तर्गत केवल 10-12% क्षेत्र ही सिंचित क्षेत्र के अन्तर्गत आता है, इनमें सर्वाधिक सिंचित क्षेत्र ऐरवा कटरा विकासखण्ड में है।

बाजरा

औरैया जनपद में लगभग 30000 हेक्टेअर भूमि में बाजरा की खेती की जाती है। इसमें केवल 10% कृषि क्षेत्र ही सिंचित है। औरैया जनपद में बाजरे की सर्वाधिक कृषि अछल्दा विकासखण्ड में की जाती है। बाजरे का सर्वाधिक सिंचित क्षेत्र अछल्दा विकासखण्ड में ही है।

रबी की फसलें

शीतकाल में नवम्बर से मार्च तक रबी की फसलें उगाई जाती हैं। जनपद में 1,30,000 हेक्टेअर भूमि पर रबी की फसलें उगाई जाती हैं। रबी की सर्वाधिक कृषि औरैया विकासखण्ड में की जाती है। ऐरवा कटरा दूसरे, बिधूना तीसरे, अछल्दा चौथे, सहार पाँचवें, अजीतमल छठे एवं भाग्य नगर रबी की कृषि में सातवें स्थान पर है। औरैया जनपद में उगाई जाने वाली रबी की फसलें निम्नवत हैं:–

गेहूँ

गेहूँ क्षेत्र की जनता की उदरपूर्ति का प्रमुख साधन है। अन्य रबी फसलों की भाँति गेहूँ की कृषि भी अक्टूबर से मार्च के मध्य की जाती है। यह औरैया जनपद की शीतकाल की प्रमुख फसल है। औरैया जनपद में लगभग 1 लाख हेक्टेअर भूमि में गेहूँ की खेती की जाती है। औरैया में गेहूँ की सर्वाधिक कृषि बिधूना विकासखण्ड में की जाती है। यहाँ लगभग 20000 हेक्टेअर भूमि में गेहूँ उगाया जाता है। जनपद में गेहूँ के कुल कृषि उत्पादन का लगभग शत प्रतिशत क्षेत्र सिंचित है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

जौ

जनपद औरैया की कुल बोई जाने वाली भूमि के लगभग 5% भाग में जौ की खेती की जाती है। जौ की सर्वाधिक कृषि औरैया विकासखण्ड में तथा सबसे कम ऐरवा कटरा विकासखण्ड में की जाती है। जनपद औरैया में जौ के अन्तर्गत बोई जाने वाली भूमि का 80% भाग सिंचित क्षेत्र के अन्तर्गत आता है।

मटर

जनपद औरैया में लगभग 500 हेक्टेअर क्षेत्रफल में मटर की कृषि की जाती है। मटर की सर्वाधिक कृषि सहार विकासखण्ड में की जाती है और मटर की कृषि का शत प्रतिशत भाग सिंचित क्षेत्र के अन्तर्गत आता है।

मूंग

औरैया जनपद में लगभग 1000 हेक्टेअर क्षेत्रफल में मूंग की कृषि की जाती है। सबसे अधिक बोया गया क्षेत्र ऐरवा कटरा विकासखण्ड के अन्तर्गत आता है। कुल मूंग के बोये क्षेत्र का 80% भाग सिंचित क्षेत्र के अन्तर्गत आता है।

मसूर

औरैया जनपद में लगभग 100 हेक्टेअर क्षेत्र में मसूर की खेती की जाती है। सर्वाधिक मसूर की कृषि बिधूना विकासखण्ड में की जाती है।

उड़द

उड़द खरीफ एवं जायद दोनों के अन्तर्गत बोई जाने वाली फसल है। जनपद औरैया में लगभग 2800 हेक्टेअर भूमि पर उड़द की कृषि की जाती है। यहाँ उड़द की सर्वाधिक खेती अजीतमल विकासखण्ड में की जाती है जबकि औरैया विकासखण्ड दूसरे, ऐरवा कटरा तीसरे स्थान पर है। उड़द के लिए कुल बोये जाने वाले क्षेत्र का लगभग 25% भाग ही सिंचित क्षेत्र के अन्तर्गत आता है।

सरसों

औरैया जनपद में लगभग 15000 हेक्टेअर भूमि क्षेत्र पर सरसों की खेती की जाती है जो कि कुल बोये गये भाग का लगभग 6% है। सरसों की कृषि में विकासखण्ड औरैया प्रथम स्थान पर है, जबकि भाग्य नगर दूसरे तथा अजीतमल तीसरे स्थान पर है। सरसों की कृषि में प्रयुक्त कुल क्षेत्रफल का 70% भाग सिंचित क्षेत्र के अन्तर्गत आता है।

तिल एवं अलसी

जनपद में लगभग 330 हेक्टेअर भूमि पर तिल तथा 5–10 हेक्टेअर भूमि पर अलसी की खेती की जाती है। तिल की कृषि में औरैया विकासखण्ड प्रथम, भाग्यनगर द्वितीय तथा सहार तृतीय स्थान पर है। तिल की कृषि में प्रयुक्त कुल क्षेत्र का 20% ही सिंचित क्षेत्र के अन्तर्गत आता है। इसी क्रम में अलसी की कृषि ऐरवा कटरा तथा भाग्यनगर में अत्यंत सीमित क्षेत्र में पायी गई।

जायद की फसलें

ये ग्रीष्म ऋतु की फसलें हैं जो मार्च के अंतिम सप्ताह से लेकर अप्रैल के प्रथम सप्ताह तक बोई जाती हैं तथा मई के अंतिम सप्ताह या जून के प्रथम सप्ताह में फसल तैयार हो जाती है। इन फसलों में अधिकतर शाक–सब्ज़ी व मौसमी फल जैसे ककड़ी, खीरा, तरबूज़ आदि उगाये जाते हैं।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

सब्ज़ी वाली फसलों के लिए अधिक पानी की आवश्यकता होती है। इन फसलों की कृषि अधिकांशतः नदियों के किनारे की जाती है। जिन किसानों के पास सिंचाई के अच्छे साधन हैं वे इन्हें अपने खेतों में भी उगाते हैं। औरैया जनपद में लगभग 400 हेक्टेअर क्षेत्र में जायद की फसलें उगाई जाती हैं।

अन्य फसलें

औरैया जनपद में लगभग 1000 हेक्टेअर क्षेत्र में गन्ना तथा 4000 हेक्टेअर क्षेत्र में आलू की फसल उगाई जाती है जो कुल कृष्य भूमि का लगभग 2% है, जबकि गन्ना लगभग 1.3% भूमि पर उगाया जाता है। आलू व गन्ना की कृषि में प्रयुक्त क्षेत्र शत प्रतिशत सिंचित है।

इसके अतिरिक्त जनपद औरैया में तम्बाकू, कपास, सनई, हल्दी, सोयाबीन, आम, अमरूद, करौंदा, कटहल आदि की भी कृषि होती है, परंतु इनका उत्पादन एवं भूमि उपयोग बहुत कम है।

निष्कर्ष

कानपुर मण्डल का औरैया जनपद विकास की दृष्टि से एक पिछड़ा हुआ जनपद माना जाता है। जनपद के उत्तर में गंगा व यमुना जैसी प्रसिद्ध नदियां हैं तथा इनके बीच के क्षेत्र में पाण्डु, सेंगुर, अहन्या, पुरहा एवं रिन्द नदियां प्रवाहित होती हैं। जनपद का उत्तरी भाग यमुना किनारे बसा है जहाँ की भूमि ऊबड़–खाबड तथा कंकड़ युक्त है। इस क्षेत्र में औरैया एवं अजीतमल विकासखण्ड है। यह क्षेत्र खरीफ की फसलों के लिए उपयोगी है। औरैया जनपद के उत्तरी क्षेत्र की भूमि समतल है तथा यहाँ सिंचाई के भी पर्याप्त साधन हैं। यह क्षेत्र रबी की फसलों के लिए भी उपयोगी है। जनपद में कृषि योग्य भूमि लगभग 206000 हेक्टेअर है। इसमें से लगभग आधे भाग में ही वर्ष में एक से अधिक फसल उगाई जा पाती है। इसके बाद भी ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं रोज़गार में कृषि का अपना विशिष्ट योगदान है। कृषि ही मुख्य रूप से रोज़गार का प्रमुख साधन है। यहाँ लगभग 17000 हेक्टेअर भूमि परती तथा 7000 हेक्टेअर के लगभग भूमि कृषि के लिए अयोग्य है, अर्थात यहाँ पर भूमि सुधार की पर्याप्त सम्भावना है। कृषि अयोग्य एवं परती भूमि को उपचारित कर जहाँ एक ओर कृषि भूमि का क्षेत्र (रकबा) बढ़ाया जा सकता है, वहीं दूसरी ओर ग्रामीण रोज़गार में भी वृद्धि की जा सकती है। जनपद औरैया में कुल बोई जाने वाली कृषि भूमि का लगभग 80% सिंचित क्षेत्र है, फिर भी यहाँ पर लगभग आधे भाग में एक ही फसल उगाई जाती है। अतः वर्ष में 2 या 3 फसलें उगाने को प्रोत्साहन देकर कृषि क्षेत्र में क्रांति की जा सकती है। जनपद औरैया में पर्याप्त सिंचित क्षेत्र होने पर भी गन्ना, अलसी, तिल, मूंगफली आदि का उत्पादन बहुत कम होता है, जबकि सोयाबीन, तम्बाकू, कपास, सनई (जूट) व हल्दी का उत्पादन नगण्य है, अतः इन फसलों की खेती को बढ़ावा देकर कृषि उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। जनपद औरैया में अभी भी पिछड़े, ग्रामीण एवं दूरदराज़ के क्षेत्रों में लकड़ी व लोहे के हलों का प्रयोग किया जा रहा है, इसको भी उन्नतशील बनाये जाने की आवश्यकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में जैविक कृषि एवं पशुपालन को बढ़ावा देकर भी ग्रामीण रोज़गार अवसरों में वृद्धि एवं अर्थव्यवस्था में सुधार किया जा सकता है। कृषि एवं औद्योगिक विकास हेतु सहायक साधन जैसे उर्वरक, कृषि यंत्र, उन्नत बीज, कीटनाशक दवाएं, औद्योगिक उत्पादन में प्रयुक्त होने वाले कच्चे माल जैसे चीज़ों के उत्पादन को बढ़ावा देकर भी औरैया जनपद में कृषि उत्पादन बढ़ाने के साथ ही रोज़गार क्रांति एवं ग्रामीण विकास किया जा सकता है।

सन्दर्भ

- गुप्ता रवि (2010). उत्तर प्रदेश के औरैया जनपद में कृषि एवं औद्योगिक विकास तथा नियोजन : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, पीएच.डी. थीसिस, छ०शा०म०वि०वि०, कानपुर।
- https://auraiya.nic.in
- https://www.amarujala.com>auraiya
- https://www.jagran.com>auraiya
- सक्सेना, जगदीप (2017). कृषि विकास और किसान कल्याणः चुनौतियों से उपलब्धियों तक का सफर, कुरुक्षेत्र, मई 2017, पृ. 9–12.
- अग्रवाल, आरुषि (2021). ग्रामीण भारत में समग्र विकास, कुरुक्षेत्र, जून 22–23.
- सिंह, अशोक (2021). ग्रामीण भारत में कृषि की भूमिका, कुरुक्षेत्र, जून 39–43.